# आधारभूत
# समाचार प्रचार
# तथा शिष्यत्व
# अगुवों की नियमावली

# मूळभूत धर्मप्रचार और शिष्यत्व

## प्रस्तावना

परमेश्वर के पास आप के जीवन के लिये एक अद्‌भुत् प्रयोजन है। आप के और हर व्यक्ति के जीवन में सफलता होगी, यह निश्चित होगा जब / यदि आप और वे परमेश्वर का उद्‌देश्य परिपूर्ण करते हैं या नहीं। परमेश्वर का प्रयोजन ढूँढकर उसे पूरा करने के लिये हमें औरों के साथ हर दिन यीशु को कैसे बाँटना यह सीखना पड़ेगा कि यीशु के लिये कैसे जिया जाता है। इसी बात में आप की सहायता करने के लिये इस अध्ययन की रचना की है ।

इस अध्ययन में आप यह जानेंगे कि आप के जीने का तरीका एक गवाही कैसे बने, सुसमाचार को कैसे बाँटा जाये, निजी गवाही कैसे लिखें , पवित्र शास्त्र के सिध्दांतो पर आधारित प्रचार, प्रचार के तरीके और प्रकार और नये परिवर्तितों को चेलापन सिखाना ।

हर एक पाठ की शुरूवात प्रार्थना के साथ करें। प्रश्नों के उत्तर अपने ही शब्दों में लिखें। दिये हुए रेखाचित्रों को कण्ठस्थ — स्मरण करें। परमेश्वर से माँगे कि जिन बातों को आप सीख रहे हैं, वैसा जीवन जीने मं आप की सहायता करे। प्रभु आप को आशिषित करे जब आप अध्ययन करें।

# आधारभूत
# समाचार प्रचार
# तथा
# शिष्यत्व
# अगुवों की नियमावली

**अगुवा** : विदयार्थी के साथ रूपरेखा पर ध्यान दें । इस बात का निश्चय करें की वे हर विषय को समझे।

**शिक्षा के विषय** :इस पाठ का उददेश यह हैं की विदयार्थी सह समझ पाये की समर्पित जीवन व्यतीत करना क्या होता हैं ताकी वे समाचार प्रचार के लिऐ तैयार हो या जो सेवकाई उनके लिए परमेश्वरने रखा हैं।

**पाठ का उददेश** :आप को इस बात के लिऐ मदत करने कि ऐंसे पुरूष या स्त्री हो जिनके पास यीशु मसीह का संदेश हैं। जे यीशु मसीह के लिए जीने योग्य हैं, वह दुसरोंके साथ उसके विषय में बाटे और उन्हें यह शिक्षा दे कि यीशु मसीह के लिए कैसे जिया जाए।

**सुसमाचार प्रचार का उददेश** :सुसमाचार को बाटना और ऐसे लोगोको बचाना जिंन्हे परमेश्वर उध्दार देता हो ताकी मसीह के साथ उनका संबंध स्थापित हो।

**प्रकार** : मित्रता के व्दारा समाचार प्रचार, एक दरवाजे से दुसरे दरवाजे तक जाकर सुसमाचार प्रचार, सडक सेवकाई दया की सुसमाचार प्रचार।

**कदम** : (क) तैयार हो जाए

१ ऐसे स्त्री या पुरूष बनने में समर्पित हो जाए जो यीशु का संदेश रखता हो (एक शिष्य और / या गवाह)

२ रोज क्रुसपर अपना जीवन व्यतीत करे अनुशासन मे रहे समय बरबाद ना करे व्यक्तीगत और सांस्कृतीक रूप से उन बातों को जीवन से हटाने के लिए इच्छुक रहे जो परमेश्वर के कार्योमे रूकावट बने। परमेश्वर की बातो से इन सब चीजो का प्रतिस्थापन करें।

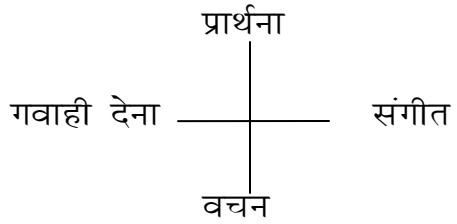


क प्रतिदिन वचन पढने में समय बीताये सीखे की आप मसीह मे क्या हैं (उध्दार प्राप्त लिए, पवित्र आत्मा से भरे हुए, जयवंत जीवन जीने के लिए बुलाए गए इत्यादी)

१ उसे पढे (इफिसिंयो ३:४)
२ उसका अध्ययन करे (२ तीमुयीयुस २:१५)
३ उसपर मनन करे (भजन संहिता १)
४ उसे स्मरण करे (भजन संहिता ११९ : ११)
५ उसे लिखे (हबकूब २ : २)
६ उसे जिऍ (रोमीयो ६ : १८—१७)
७ उसे बाटें (१यूहना १ : १—३)

ख प्रार्थना करे। प्रतिदिन इस विषय मे परमेश्वर से बातचीत करे:
१ आपके जरूरतो के विषय में
२ खाए हुए लोगो के लिए जो आपके इर्द—गिर्द हैं तथा दनके जरूरतो के लिए
३ सहविश्वासियों के जरूरतो के लिए
४ जिन लोगो और जगहो तक आप पोहचना चाहते हैं विजय देखने से पहले

**ध्यान दे** :पवित्र शास्त्र के आध्ययन के साथ सबसे प्रभावशाली तरीका पढने का यह होता हैं की हम एक आत्मीक दैंनिक रखे परीशिष्य 'क— देखे

ग दुसरे विश्वासियों के साथ जो यीशु मसीहा के लिए जी रहे हैं उनके साथ प्रतिदिन समय बीताये प्रार्थना करे गाऍ वचन का आध्ययन करे, और एक दुारे के साथ बाटें

घ जीन लोगो के साथ आप प्रतीदिन मिलते हैं उनसे यीशु मसीहा के विषय में बाते तथा यीशु मसीहा के लिए जीने की खोज करें

३ सुसमाचार प्रचार के अलग प्रकार के विषय में तथा तरीके,पर्चे, शास्त्र, व्यक्तीगत गवाही, तथा सुसमाचार प्रस्तुतिकरण का अध्ययन करें

१ ठीक प्रकारसे निर्णय लें

**मित्रता व्दारा सुसमाचार प्रचार** :
उददेश : सुसमाचार से लोगो के साथ बॉटना
तरीके : (पाठ ६ देखें)
नियम : (पाठ ७ देखें)

**दरवाजे से दरवाजे तक का सुसमाचार प्रचार उददेश उददेश** :सुसमाचार को हर घर में एक प्रत्येक क्षेत्र मे बॉटना, और कलीसीया में आनेवाले नए लोगो के लिऐ अनुवती कार्यवाही करना।
**तरीके** : (पाठ ७ देखें)
**नियम** : (पाठ ७ देखें)

**सडक की सेवकाई**
**उददेश** : एक प्रत्येक क्षेत्र या लोगो को सुसमाचार प्रचार के व्दारा भिगो देना
**तरीके** : (पाठ २ देखें)
**नियम** : (पाठ २ देखें)

**करूणा सेवकाई**
**उददेश** : शारीरीक मानसीक और भावुक वस्तु जैसे जरूरतोंकी पूर्ति के लिए सुसमाचार प्रचार व्दारा अवसर प्रदान करना।
**तरीके** : (व्यवहार सेवकाई अध्ययन देखे)
**नियम** : (व्यवहार सेवकाई अध्ययन देखे)

**आंदोलन सुसमाचार उददेश** : सुसमाचार प्रचार करने के लिऐ लोगो को इकट्ठा करना
**तरीके** : (विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता)
**नियम** : (विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता)

२ (दो या जादा) समुह को संगठित करे । इस बात को निश्चित करे की वे प्रशिक्षित हो।

३ इस बात का निश्चय करे आप के पास जरूरी वस्तुएँ हैं, पचियॉ पवित्र शास्त्र, किताबे औंर सब साधन, इत्यादी ।

४ पहनावा ठीक प्रकार का होना चाहीए ।

ग जाओ

१ दिए गए तरीकों और नियमों के अनुसार योजना को निभाये
२ विश्वासयोग्य रहे।

**आधारभुत प्रश्न**

विदयार्थियोने जो सिखा हैं उसे लागू करने में उनकी मदत करना

१ स्त्री या पुरूष होने के नाते क्या आप यीशु मसीह के संदेश के साथ समर्पित हैं? हॉ— नहीं — यदि नहीं, तो आजके दिन समर्पण लें।
२ क्या आप प्रती दिन क्रूसपर समय बीताते हैं ताकी परमेश्वर आपको ऐसा स्त्री और पुरूष बनाए जैंसा वह चाहता हैं? हॉ — नहीं — यदि नहीं, तो आज से आप ऐसा करना शूरू करें।
३ क्या आप आध्यन करने की ईच्छा रखते हैं ताकी यीशु मसीहा का प्रचार प्रभावशाली रूप से हो? हॉ — नहीं — यदि नहीं, तो आज ऐसा करने का निर्णय ले।

**व्यवहारीक रूप से लागू करना** : स्वयं को तैंयार करे की ऐसे स्त्री औंर रूप बने जो यीशु मसीह का संदेश लेकें चले।

परीशिष्ट ख में दिए गए बेदारी प्रार्थना सुची देखें।

परीशिष्ट क मे दिए गए निर्देशतत्वों ोका उपयोग करते हुए आत्मीक दैंनिक रखना सूरू करें, यदी आप ऐसा नही कर रहे हो तो।

# आधारभुत समाचार प्रचार तथा शिष्यतत्व
# पाठ २
# समाचार प्रस्तुतीकरण

**अगुवा** : विदयार्थी के साथ रूपरेखा देखें इस बात को निश्चित करें की वे हर विषय को समझे।

**शिक्षा के विषय** : इस आध्ययन का उददेश विदयार्थियों को सुसमाचार का संदेश के मुख्य विषय को समझने में उन्हें मदद करना हैं, ताकी हर आवसर पाने पर वे इस प्रभावशाली रूप से बाट सके।

**परीचय** : कई बार हम समाचार का प्रस्तुतीकरण आधे दिल से करते हैं (सिर्फ यही प्रार्थना करो और तुम स्वर्ग चले जाओंगे) और इसका परीणाम आधे दिलसे करते हैं। यदि हमे संच्चाई से संसार को बदलना हैं तो हमे यूहन्ना बपतिस्मा दाता जो सुसमाचार बाटता था उसकी तरह, यीशु, पतरस, पौलुस के तरह प्रचार करना चाहीए, यीशु मसीह के प्रति विश्वास, तथा परमेश्वर के प्रति पश्चाताप (प्रेरितो के काम २०,२१) यह सुसमाचार प्रस्तुतीकरण एक ऐंसा साधन हैं जिससे आप को मदत मिलेगी। सुसमाचार प्रचार के संदेश को प्रस्तुत करने के लिए, हमें यह समझना हैं कि ये क्या हैं। सुसमाचार प्रचार के संदेश में चार मुख्य बाते होती हैं

१ मनुष्य की समस्या पाप हैं (यशायाह ५३:६, रोमियों ३:२३)

२ इस पाप में हमे परमेश्वर से अलग किया हैं(यशायाह ५३:६, रोमियों ३:२३)

३ प्रभु ने हमसे इतना प्रेम किया की वह हमारे लिए क्रुसपर ताकी हम अनंत जीवन पाएँ
(१ पतरस ३:१० रोमींयो ५:२३)
ध्यान दें : आनंत जीवन यीशु मसीह के व्दारा दिया गया परमेश्वर के साथ रिश्ता हैं। (युहना १७:३)

४ इस अनकाल का जीवन पाने के लिए, हमे परमेश्वर को संपूर्ण हदय में स्वयं को समर्पण करना चाहिए।
(लूका १४:२६,२७ और ३३, रोमीयों १०:९:१३)

**उददेश** : सुसमाचार प्रचार का उददेश लोंगो को अनंतकाल का जीवन स्वीकार करने में उनकी मदत करना हैं सिर्फ उन्हे स्वर्ग में ले जाना नही । यूहन्ना १७:३ कहता हैं, '' औंर अनन्त जीवन यह हैं, की वे तुझ अव्दैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीहा को, जीसे तुने भेजा हैं जाने। '' लोगों को अपना जीवन इकट्ठा होते

देखना हैं । उन्हें समस्याओं के लिए समाधान चाहीए संपूर्ण हदय से किया हुआ समर्पण यीशु मसीह के पीछे हो लेने के लिए ही एकमात्र मार्ग हैं जो उनके जीवन के समस्याओं का हल हैं

एक व्यक्ती को आनंतकाल के जीवन में प्रवेश करने के लिए तीन बाते होना चाहिए। उन्हे पश्चाताप करना चाहीए, स्वीकार और पुनर्योजना करना चाहीए। पश्चाताप परमेंश्वर के प्रति होना चाहीए । उन्हें सच्चे रूप से खेदित होना चाहीये कि उन्होंने कैंसे परमेश्वर के हदय को पाप के व्दारा शोकीत किया हैं, सिर्फ इसलिए नहीं की उनके परीवार या किसी को उसके वजह से क्या हुआ हैं, इत्यादी उन्हें यीशु मसीह को उध्दारकर्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार करना चाहीए। यह तब होता हैं जब जीवन को संपूर्ण रूप से परमेश्वर को दिया जाए (संबेधों,लक्ष्यों औंर आकांक्षाओ, औंर निजी संपत्ती) (लूका १४:२६—२७ तथा ३३) ; क्रुसपर यीशु मसीहके छुटकारे के कार्य पर भरोसा रखना जो उन्हें पापसे स्वच्छ कर सके (इब्रामियों ९:१४) ; औंर कीसी के पास आंगीकार करने के लिए तैयार रहना की यीशु ही उनका प्रभु औंर उध्दारकर्ता हैं. (रोमीयो १०:९—१०) यदी कोई व्यक्ती सचमुच पश्चाताप करता हो और स्वीकार करता हो, तो वे परमेश्वर से प्रेम करता हैं औंर फिर उसके जीवन के विषय में फिरसे योजना करेंगे ताकी वे परमेश्वर की वचन की आज्ञा में जीए। (यूहन्ना १४:२१—२३,१ यूहन्ना ५:१—३ ) यह सुसमाचार प्रस्तुतिकरण आपको ज्ञान देगा तो सुसमाचार बाटनें में आवश्यक होगा। यह उतना ही प्रभावशाली होगा जैंसे आप खोए हुए आत्मांओ के लिए प्रार्थना में समय बिताते हों।

**लक्ष्य** : सुसमाचार प्रचार का लक्ष्य सुसमाचार संदेश को साधारण औंर स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करना हैं ताकि पवित्र आत्मा एक व्यक्ती को उध्दार (आत्मिक जन्म) कि तरफ खीचे । रोमीयो १०:१४:१६ यूहन्ना ६:४४:३:३,५—६.

## सुसमाचार प्रस्तुती के लिए कुछ कदम

**कदम १** इस बात का निश्चय करे की आपने प्रार्थना किया हैं. आपके और परमेश्वर के बीच कुछ ऐसा पाप हो जिसका अंगीकार नही कीया गया हो इस बात का निश्चय करें की आप धार्मिक कर्तव्य को निभाने के लिए सुसमाचार नही बाट रहें हैं, परंतु ऐसे एक हदय से जो खोई हुई आत्मांओं के लिए प्रेम औंर चिंता रखता हो । भजन संहिता १२६:५—६

**कदम २ : पहला कथन या प्रश्न**

विश्राम करें, व्यक्ती को पूर्ण रूप से अभिव्यक्ती के लिए आवसर दे । यह उनके हदय को सुसमाचार स्वीकार करने के लिए खोलेगा। प्रश्न या कथन विस्तृत रूप से दे औंर इसकी रूपरंखा इसप्रकार होनी चाहीए ताकी लोगो में रूची उत्पन्न हो इसे सांस्कृती या सामाजीक रूपसे प्रासंगीक बनाए ।

**उदाहरण १** : यीशु मसीह और कुएँ पर स्त्री जैसे यहून्ना ४ में लिखा हैं। ''मुझे पीने के लिए पानी दो और मेरे पास जीवन का जल हैं ''.

**उदाहरण २** : भारत में हम अक्सर पुछते हैं ''क्या आपने परमेश्वर का मार्ग पाया हैं?'' भारतीय धर्म इस बात का ख्याल रखता हैं कि परमेश्वर का मार्ग कैंसे पाया जाये.

गवाही का विस्तृत वचन जो परमेश्वरने आप के लिए किया हैं या किसी और के लिएँ जिन्हें आप जानते हैं जीसकी समस्या एक ही प्रकारकी हैं क्योंकी सुननेवाले का भी उपयोग होता हैं।

**उदाहरण** : चंगाई की गवाही किसी में रूची उत्पन्न कर सकती हैं जिसका एक ही प्रकार का बिमारी हो ।

**कदम ३ : सुसमाचार संदेश**

**क पाप (रोमियों ३:२३)**

**प्रश्न : क्या आप महसूस करते हें की आप पापी हैं**

**उत्तर** : उन्हें यह महसूस करने में मदद करें कि एक पाप भी करने से पापी कहलाए जाते हैं । और, यह भी की परमेश्वरसे हटकर किसी और बात के लिए जीना भी पाप होता है । यह एक चिन्ह होगा कि वे परमेश्वर के प्रेम पर विश्वास नही करतें तथा वह उनके लिए उत्तम सोचता हैं । १ युहन्ना ३:४: १: नीतीवचन २:४, रोमीयों १४:२३ ब

**दृष्टांत** : एक गीलास सेब का रस, सिर्फ एक बूंद जहर उसे नही पीने के लायक बनाता हैं.

**ख अलगाव (रोमीयो ६:२३)**

**प्रश्न : क्या आप जानते हैं की पाप का परीणाम क्या हैं**

**उत्तर** : भले ही उसके जवाब कुछ भी क्यों ना हो उन्हें यह महसूस दिलाने में मदद करें की पाप ने उन्हें परमेश्वर से अलग कर दिया हैं.और यह उसके जीवन का उसके परीवार, उसके मित्र, समाजको नाश कर रहा हैं, और अनंतकाल के अलगाव को उत्पन्न करता हैं,जो की मृत्यु और नर्क हैं। उन्हें यह जानने दे की इसकी वजह से समस्याएँ हो रही हैं या भविष्यमें ऐसा हो सकता हें. नीतीवचन ३६:१४:११ भजन संहिता ९:१७, याकूब १:१३:१६

**<u>दृष्टांत</u>** : एक ट्रॅक्टर जब ढलानवाले पहाडपर कार को खीचता हैं, सिर्फ एक हि कडी टूटने के व्दारा अलगाव आ सकता हैं.

**ग प्रतिस्थापन (रोमियों ५:४)**

**प्रश्न : क्या आप जानते हैं कि परमेश्वरने क्या किया हैं ताकी आप का पाप अलग हो जाएँ ?**

**उत्तर** : भलेही उसका जवाब कुछ भी क्यों ना हो, उन्हें परमेश्वर को समझनेमें मदद करें (यीशु) इसलिए मरे क्योंकी वह उनसे प्रेम करता हैं. औंर उनके लिए उत्तम चाहता है। की कोइ आच्छी बात से वे वंचीत रहे, उसे पता हैं की पाप कुछ क्षण के लिए आच्छा लगता हैं, परंतु अंत में यह उन्हें चोट पॅहुचाता हैं क्योंकि वह विश्व के नियमों का उल्लंघन करता हैं (परमेश्वर का नैतीक नियम जो उत्तम हैं,क्योंकी वह सर्वज्ञानी हैं ) उन्हें बताए की परमेश्वर उन्हें अनंन्त जीवन देना चाहता हैं (संच्ची शांती, आनंद और खुशी) वह उसके हदय में रहना चाहता हैं ओंर पाप पर विजय पाने में उनकी मदद करना चाहता है ।परमेश्वरने यह दिखाया की वह उसके लिए कितना चिंन्ता करता हैं. यीशु मसीह को क्रुसपर मरने के लिएँ भेजने के द्वारा औंर उसके पाप के लिए सजा भुगतने के द्वारा उन्हें यह समझाए की उनकी भलाई औंर धार्मिक कार्य पाप को उनके जीवनसे हटा नही सकते क्योंकि ऐसा होगा की धूल को धूल से मिटाना। युहन्ना ३:६, १ यूहन्ना ३:४, रोमीयों ६:५—६.

**दृष्टांत** : कैंदी लोग मौंत के पंक्ति में , यदी वे आपने पाप का भुगतान करते हैं तो वे मर जाएँगे, यदि उनके जगह कोई और मरे, तो वे आजाद हो जाते हैं।

**समर्पण** :

**प्रश्न : क्या आप जानते हैं कि आप पाप से केंसे स्वच्छ हो सकते हैं औंर परमेश्वर का आनंत जीवन कैंसे प्राप्त कर सकते हैं?**

**उत्तर** : एक व्यक्ती को आनंत काल का जीवन पाने के लिए तीन बाते होना जरूरी हैं, उन्हें पश्चाताप स्वीकार औंर पुनर्योजना करना चाहिए।

**१ पश्चाताप करें (रोमीयो २:४)**

**उत्तर** : पश्चाताप परमेश्वर के प्रती होना चाहिए, उन्हें सच्चे प्रकारसे खेदित होना चाहीए की कीसी प्रकार उनके पाप ने परमेश्वरके हदय को ठेस पहुॅचाई हैं न की सिर्फ उन्हें या परीवार वालों को । उन्हें पाप से मुडने की इच्छा होनी चाहीए और परमेश्वर के साथ आज्ञाकारीता में जीना चाहीए.

**दृष्टांत** : सडक पर आप जा रहें हैं, आप मुड जाते हैं और विपरीत दिशा में चलने लगते हैं क्यों की आप आगे खतरा देखते हैं ।

**२ स्वीकार करना (रोमीयो १०:९:१३)**

**उत्तर** : उन्हें यीशु मसीह को प्रभु औंर उध्दार कर्ता के रूप में स्वीकार करना चाहीएँ यह तब होता हैं जब पूर्ण रूप से जीवन को हम समर्पित करते हैं (रिश्ते, लक्ष्य और आकांक्षाएँ, तथा संपत्ती) परमेश्वर के लिएँ लूका १४:२६—२७ तथा

३३ , और यीशु के मृत्यु तथा पुनरूत्थान पर भरोसा करते हैं की वह पाप से स्वच्छ करेंगा और उन्हें सामर्थ देगा ताकी परमेश्वर के साथ आज्ञाकारीता में जीएँ। उन्हें कीसी के पास आंगीकार करने में इच्छा होनी चाहीएँ कि यीशु उनका प्रभु और उध्दार कार्ता हैं. (१ यूहान १:९, इब्रानियो ९:१४)

**दृष्टांत** : एक व्यक्ती व्यवसाय प्रबंधक को उसके व्यवसाय की देखरेख के लिए रखता है क्योंकी उसे पता हैं की उस व्यक्ती ने मुल्य चुकाया हैं प्रशिक्षण के द्वारा तथा वह इस कार्य को बहतर कर सकता हैं. वह दुसरोंको उसके प्रबंधक के विषय में कहने से लज्जाता नही हैं।

**४ पुनर्योजीत करना (रोमीयो ६:१७:१०)**

**उत्तर** : उन्हें यह समझाएँ की जब हम मसीह पर सम्पूर्ण हदय से भरोसा करते हैं, तो हम अपने जीवन का पुनर्योजना करना चाहते हैं, ताकी परमेश्वर की आज्ञाकारीता में जिएँ क्योंकी हम जानते हैं कि वह हमसे उत्तम बातें चाहते हैं ।

**दृष्टांत** : हम यातायात पुलीस पर भरोसा करते हैं क्योकी हम विश्वास करते हैं कि उसका निर्देशन हामारे लिएँ भला है।

**निष्कर्ष** :

**प्रश्न : क्या आप आपना हदय पूर्ण रूप से यीशु मसीह को समर्पित करने की इच्छा रखते हैं ?**

**उत्तर** : यह सुसमाचार प्रस्तुतीकरण का सबसे महत्वपूर्ण भाग हैं, एक मनुष्य के प्राण का अनंतकाल का भाग्य तराजूपर देखा जाता हैं, यदी वे समर्पण करने में इच्छुक नही हैं तो समाचार प्रस्तुती को सावधानी से देखे. पूछे ''क्या आप समझते हैं'' ऐसे विषय जो वे नही समझते हो इस बात का निश्चय कर लेने के बाद वे समझते हैं कि सुसमाचार क्या हैं फिर से निष्कर्ष प्रश्न पूछें यदी वे फिर भी मसीह को जीवन देने की इच्छा नहीं रखते, तो सावधानी और प्रेम से उन्हें समझाएँ कि परमेश्वर को 'न' कहना खतरनाक होता हैं।

**उन्हें समझाएँ** :

१ परमेश्वर के पास लोग जब चाहते है तब नही जा सकते परंतु जब परमेश्वर उन्हें अपनी आत्मा से खिचता हैं तब लोग उसके करीब जा सकते हैं. यूहन्ना ६:४४

२ किसीने कल का वादा नही किया हैं यदी वे उसी समय मर जाते हैं तो परमेश्वरके आनंत काल का न्याय का सामना करना पडेगा श्कुरिन्नियों ६:२

३ यह और भी कठीण हो जाएगा, यदि असंभव नही, परमेश्वर के पास आनेके लिएँ यदी वे न कहते हो । नीतीवचन २९:१

यह निश्चीत करनेके बाद वे स्पष्ट रूप से निर्णय के महत्व को समझते हैं, फिरसे निष्कर्ष प्रश्न पुछे। यदी वे फिर से न कहे, उनसे कहे की परमेश्वर उनसे प्रेम करता हैं और आप भी, और यह भी की आप उनके लिए प्रार्थना करते हैं. उन्हें याद दिलाएँ की वे जो जानते हैं उसके लिए उन्हें लेखा देना हैं।

जब कोई व्यक्ती यह दिखाता हैं की वह आपना जीवन यीशु मसीह को समर्पित करने के लिए तैंयार हैं, उन्हें बताए की आप उनके लिए प्रार्थना करेंगे और उनके बाद उन्हें जोर से प्रार्थना करना हैं. परमेश्वर को यह बताते हुये की वे सच्चे रूप से पाप के लिए खेंदित हैं और बदलने की ईच्छा रखते हैं । यह भी कि वे आपना जीवन और सब कुछ यीशु मसीह को सौपना चाहते हैं । उन्हें यीशु मसीह को मांगना हैं की, वह उनके हदय में आऐं और अपने पवित्र आत्मा से उन्हें भर दे ताकी लोग उनके लिए जी सके, उनसे प्रार्थना परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए यीशु मसीह के नाम से ऐसा करें.

**आखरी प्रश्न : आपके लिए यीशु मसीह कौंन हैं ?**
**उत्तर** : मेरा प्रभु औंर उध्दार कर्ता यदी कोई और उत्तर दिया जाये, तो उनसे पुछे की इसका मतलब क्या हैं , कोई गलतफहमी हो तो इसे हटाने में उन्हें मदद करें.

**कदम ४ : कटनी को संभालना**

जैसे की किसान को कटे हुए गेहूँ यदि आच्छेसे न रखना आए, ताकि वे सडे नही , तो उसी तरह यह किसी व्यक्ती, कलीसीया, या समाज को मसीह में लाना होता हैं, बीना उह समझे की उनका समर्पण कैसे रखा जाए ।

ध्यान से और प्रेम से उस व्यक्ती को समझाए जीने आपना जीवन मसीह को समर्पित किया हो.

क आपने अभी — अभी जीवन का सबसे महत्वपूर्ण बात स्वीकार किया हैं, जो कि यीशु मसीह हैं, पवित्र शास्त्र इसे आत्मीक धर्म या आत्मा व्दारा जन्म लिया हुआ भी कहता हैं । युहान ३:३, ५—६

ख आप परमेश्वर के बच्चे हैं और उसके लिए जीने के लिए सामर्थ रखते हैं, यूहान्ना १:१२—१३ , रोमीयो १५—१६ क्योंकी उसका पवित्र आत्मा आप में जीवीत रहता हैं, आपको परमेश्वर को अनुमति देना है कि वह पवित्र आत्मा से आपको मारे। उसने यह वादा किया हैं की यदि हम मागे तो वह हमे देगा । पवित्र आत्मा के भरणे के लिए उनकी अगुवाई करें । प्रेरीतों के काम २:४, ४:३१, लूका ११:१३

ग परमेश्वरने उन्हें इसलिए बचाया ताकी आपके जीवन में उसके उददेश पूरे हो । जैंसे तुम्हारे शारीरीक शरीर में भोजन की जरूरत होती है। जीने और बढने के लिए, आपके नर मनुष्यत्व को प्रतिदिन आत्मीक भोजन की जरूरत होती हैं ताकी आप बढें और परमेश्वर के उददेशो को पूरा करें । यह आत्मीक भोजन परमेश्वरका उददेश को पूरा करें । यह आत्मीक भोजन परमेश्वर का वचन हैं , जो पवित्र शास्त्र हैं, जो आपको प्रतिदिन पढना और आज्ञा करना हैं । लूका ४:४,रोमींयो ६:१७, तीमुथियुस १:९.

घ जिस तरह एक बच्चा लडखडाकर गीर सकता हैं , जिस तरह वो बढता और पडता हैं । उसी तरह आप भी आत्मीक रूप से बढते समय संघर्ष के दौरान जा सकते हैं । छोड़े नही । आपने आप का आंगीकार करना याद रखे, परमेश्वर के वचन कि खोज करें और आप आत्मीक रूप से बढेंगे । परमेश्वर आपको मदद करेगा । १ यूहान्ना १:९, २:१, ११०, यूहान्ना १६:१३, १४:२६—२७, इफिसियों ३:१६.

च क्यों कि आप मनुष्य हैं, देह से कमजोर आपको यह जरूरी होता हैं कि आपके समर्पण का नवीनीकरण करें मसीह के प्रति और उसके आत्मा से भर जाएं । प्रतिदिन प्रार्थना के जरीए ताकि आप उसकी इच्छा पूरा करे बजाए स्वयंके । यूका ९:२३, यूहान्न १५:७, २३—२४, गलजियों ५:१६ औंर २५, प्रेरितों के काम ४:३१, इफिसीयों ५:१८.

घ आपको यह इच्छा रखना चाहिए कि दूसरो को मसीह के विषय में बताएं और यह कि वह आपका प्रभु औंर उध्दारकर्ता हैं । यह आपके विश्वास को सामर्थी बनायेगा औंर परमेश्वर आपको आशीष देगा, प्रेरीतों के काम १:८, १०:३२,३३, लूका १२:८—९,याकूब ५:२०, भजन संहिता १२६:५—६.

ज आपको पानी का बपतिस्मा लेना जरूरी हैं और स्थानीय पवित्र शास्त्र का भाग बनाना हैं जो विश्वासी सभीसीया के हैं । यह सार्वजनीक गवाही है जो बनाता हैं कि आप आपसे फिर गये हैं और यसीह में नर व्यक्ती हैं । आपको दुसरे मसीहयां की संगति कि जरूरत हैं ताकि आत्मिक रूप से सामर्थी बने रहें । प्रेंरितो के काम २:३८—३९, रोमींयों,इब्रानियों १०:२४—२५.

## अपुवर्ती कार्यक्रम

इस बात को निश्चीत करने के बाद कि वह व्यक्ती मसीह में सर्मपण को समझता हैं, तथा किस प्रकार प्रतिदिन उसके लिए जिया जाए, तब उससे नाम, पता और संपर्क लें । उनके लिए प्रार्थना करें और इस बात का निश्चय करें कि उनके पास पवित्र शास्त्र या नया नियम हैं । उन्हें व्यक्तीगत रूप से शिष्य बनाऍं २४ घंटो के अन्दंर यदि यह संभव हो । यदि व्यक्तीगत रूप से उन्हें शिष्य नही बना सकते , तो उन्हें पत्र व्यवहार व्दारा शास्त्र का आध्ययन भेजना अच्छा

विचार हैं यदि आप व्यक्तीगत रूप से मिल नहीं सकते । उनके साथ संपर्क या चिठठी व्दारा संबंध बनाए रखें यदि संभव हो तो साप्ताहिक रूप सें जब तक वे एक स्थानीय कलीसीया में स्थापीत नहीं हो जातें ।

**समस्याओं को सुलझाना,**

**१ वे ऐसा कहते हैं कि मैं मसीह में विश्वास करता हूॅ परंतु वे जो चाहते हैं वोही करते हैं ।**

**उत्तर** : जो मुझ से, हे प्रभु हे प्रभु कहता हैं, उन म ेंसे हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परंतु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता कि इच्छाप्रर चलता हैं । मत्ती ७:२१ क्या आप हदय से परमेश्वर के प्रति समर्पित हैं । यीशु मसीहा के लिए जीने या उसका नाम इसलिए सिर्फ लेते हैं ताकी स्वर्ग में जाने की आशा हो ।

**२ परमेश्वर किसी को नरक में नही भेज सकता**

**उत्तर** : आप ऐसा कहते हैं, ''मैं खुश हूॅ कि आपने ऐसा कहा क्यों की आपने महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा हैं । हम यह किस प्रकार जान सकते हैं आप यह किस प्रकार जान सकते हैं आप किस प्राकर जानते है कि परमेश्वर कैसा हैं हमारे पास दो तरीकेहै इस बात को जानने के लिए :

१ मनुष्य के कारण । हम बैठकर हम परमेश्वर का मनन करते हैं, और किसी निष्कर्ष तक पहुचते हैं । ऐसा करनेसे कुछ लोगो के पास बहोत आजिब धार्मिक विचार हैं । किसे संच्चा किसे सच्चा ठहराया जाय ।

२ प्रकाशन : परमेश्वरने उसके पवित्र शास्त्र और उसके बेटे के जरीए स्वयं का प्रकाशन दिया हैं । प्रश्न यह नही कि कोई उसके विषय में क्या सोचता हो परंतु यह कि पुत्र यीशु मसीहा के व्दारा परमेश्वरने उसके पवित्र शास्त्र में क्या कहा हैं ।

**३ मै पवित्र शास्त्र पर विश्वास नहीं करता**

**उत्तर** : कुछ लोग तो ऐसा कहते हैं, ''मैं पवित्र शास्त्रपर विश्वास नही करता । तुम किसी और तरीकेसे मुझे समझाओ ।

मूलता : हमें पवित्र शास्त्र का बचॉव नही करना हैं परन्तु हम इस विरोधाभास के प्रति ऐसा प्रतिउत्तर दे सकते हैं । '' आप पवित्र शास्त्र के नामपर विश्वास नही करते'' यह बहोत दिलचस्प बात हैं और यह आपके लिए सहभाग्य कि बात हैं, परंतु मैं एक प्रश्न पुछना चाहता हूॅ । पवित्र शास्त्र उस व्यक्ती के बारेमें क्या शिक्षा देता हें कि किसप्रकार उसे अनंत जीवन मिलना चाहिए और स्वर्ग जाना चाहिए बाट वे यह कहकर प्रतिउत्तर देगे कि आज्ञाओ को रखना या सुनहरे नियमोंका पालन कर या मसीहा के उदाहरण के अनुसार चलना आप ऐसा प्रति उत्तर दे सकते हैं, '' इसी बात को लेकी मैं नाम से डरता था । आपने पवित्र शास्त्र का तिरस्कार किया हैं उसके बीना उददेश को समझे हुए । आप का जवाब पूर्ण रूप से गलत हैं ।

**४ में परमेश्वरपर विश्वास नही करता**

**उत्तर** : क्यों नही. मुख्य कारण यह होता हैं कि लोग परमेश्वर के उपर विश्वास नही रखते वह इसलिए कि वो पाप से आपने आप को छुडाना नही चाहते । यह इस बात को मान लेते हैं कि परमेश्वर दनससे प्रेम करता हैं। या उनके लिए सबसे उत्तम इक्ष्छा रखता हैं । उनका जवाब उनकी समस्याओ को दिखाता हैं । हॉ, मैं देखता हॅ । आप की समस्या यह हैं कि आप पाप से स्वंय को छुडाना नही चाहते या ऐसा विश्वाास करना चाहते हैं कि परमेश्वर आपसे प्रेम करता हैं ।

**सारांश** : इस समाचार प्रस्तुतीकरण में जिन चीजो को प्रस्तुत किया गया हैं वह सुसमाचार संदेश को आप के साथ प्रभावशाली रूपसे बाटने के लिए उपयोग किया गया हैं । इसे याद करें, विशेष रूप से आयते, दुसरोंके साथ इसे करे इसके पहले कि आप खोए व्यक्ती को इसे सुनाने में उपयोग करें । जितना ज्यादा आप इये इस्तेमाल करेंगे उतना ज्यादा ये आपका एक भाग बन जाएगा और इसे आप आपने हदय से उपयोग करनें में समक्ष होगें । याद रखे कि सांस्कृतीक समूह तक पहुॅचने के लिए विषेश प्रशिक्षण कि जरूरत पडसकती हैं । हम इस सुचना के बारे में बॉट नही सके परंतु यह U.S. Center for World mission, 1605 Eligabeth street, Pasadena, c.A. 91105.

परमेश्वर आपको आशिष दे जैसे आप दुसरोंके साथ सुसमाचार बाटतें हें । समस्याआ ेंको सुलझााने में जो उपर दि गयी बातें हैं वह EVANGELISON EXPLOSION जो डॉ जेम्स केन्नडी व्दारा लिखित हैं उसपर आधारीत हैं।

**आधारभूत प्रश्न** विदयार्थीयोने जो सीखा हैं उसे अपने जीवन में लागू करने में उनकी मदद करना ।

क्या आप समाचार सुसमाचार प्रस्तुतीकरण का आध्ययन करने में इच्छा रखते हैं ताकि आप इसे प्रभावयााली रूप से उपयोग कर सके?

व्यवहारीक रूपसे लागू करना : सुसमाचार को अपने मित्र या अपने परीवार के सदस्य के साथ बाटने की कोशीश करना ?

# आधारभूत सुसमाचार प्रचार और शिष्यत्व
# पाठ ३.
# व्यक्तीगत गवाही

**टगुवा** : _विदयार्थी के साथ रूप रेखा देखे इसबात का निश्चय कर ले कि वो हर विषय को समझे ।

**शिक्षा के विषय** : यह पाठ का उददेश विदयार्थी को एक विस्तुत्र गवाही लिखने में मददत करना हैं, ताकि वे गवाही देते समय इसका उपयोग कर सके।

निचे लिखे गए रूप रेखा का उपयोग करते हुए एक विस्तुत्र गवाहि लिखे ।

१ यीशु मसीहा को स्वीकार करने से पहले मेरा जीवन :

२ मैंने किसी तरह एहसास किया मुझका यीशु मसीहा कि जरूरत हैं ।

३ मै मसीही कैसे बना ?

४ मसीह किसप्रकार मेरा जीवन अर्थपूर्ण बनाता हैं ।

५ आपके व्यक्तीगत जरूरतो को पूरा करने के लिए एसे सूची बनाये जो परमेश्वरने आपके लिए किया ।
चंगाई, आर्थिक आशिष इत्याइि.

६ मसीह किस प्रकार मेरा जीवन अर्थपूर्ण बनाता हैं?

७ आपके व्यक्तीगत जरूरतों को पूरा करने के लिए एसी सुची बनाए जो परमेयवरने आपके लिए किया ।
चंगाई आर्थिक आशीष इत्यादि.

# आधारभूत सुसमाचार प्रचार और शिष्यत्व
# पाठ ४.
# सुसमाचार प्रचार के पवित्र शास्त्रीय सिध्दांत

**शिक्षा के विषय** : इस पाठ का उददेश यह है कि विद्यार्थी को सुसमाचार प्रचार शास्त्रीय सिद्धात को समझाए ताकी वे अपने जीवन मे इसे लागू कर सके
अगुवा : विद्यार्थी के साथ इस प्रश्नों को देखे उनका जबाब मिलता — जुलता होना चाहिए ।

**क. प्रार्थना सिद्धांत**

१. जब हम समस्याओं में पडते है तो हमें क्या करना चाहिए लुका १:१?

२. हमें किस बात के लिए प्रार्थना करना चाहिए १ ती मुथीयुस २ ; १—४ ?

३. हम दुसरों कों हमें मदद करने के लिए कैसे कार्य कर सकते हैं मत्ती ९:३६—३८ ?

४. हमे सामर्थ कहॉ से प्राप्त होता है प्रेरितों कें काम ४ : ३१?

**ख. सामर्थ के सिद्धांत**
१. हमारें सामर्थ का स्त्रोत क्या है प्रेंरितों के काम १:८ ?

२. हमारें संदेश को सामर्थ कहा से मिलती है १ कुरिन्थियों १:१८ ?

३. दुसरोंको परमेश्वरका सामर्थ कैसे दिख पडता हैं १ कुरिन्थियों २:१—५ ?

३ हमारे संदेश का सामर्थ क्या करने की क्षमता रखता हें । इब्रानियों ४:१२ ?

**ग बोने और काटने के सिद्धांत**

१ गवाहि देते समय हमारी मनोव्रत्ती कैसी होनी चाहिए ?

२ हम जीस रक्कम को बोते हैं उसका परिणात पर क्या प्रभाव होता हैं श्कुरिन्थियों ९:६

३ हमें किस प्रकार बोना चाहहिए बलजियों ६:६—१० ?

४ हमें क्या बोना चाहिए, कहॉ बोना चाहिऍ, और परीणाम लूका ८:५:११:१५ ?

**घ लोगो तक पहुॅचने का सिध्दांत**

१ यीशु मसीहा यूहन्ना ४:५—४२ में किन आठ सिध्दांतो को दिखाता हैं?

२ हम सुसमाचार को बाटते समय किन दो बातोंका उपयोग करते हैं यहूदा १:२२—२३ ?

३ सुसमाचार प्रचार करते समय हमें क्या नहि करना चाहिए श्कुरिन्थियों ४:१—६ ?

४ सुसमाचार को बाटते समय हमें किन बातो से दूर रहना चाहिए तीतूस ३:४—९ ?

## च परीणाम के सिध्दांत

१ लोगों से प्श्चाताप कौन कराता हैं २तीमुथीयुस २:२४—२६ ?

२ जब हम परमेश्वर के वचन को बाटतें हैं तो वह किस बात कि पूर्ती करता हैं । यशायाह ५५:१०—११ ?

**आधारभूत प्रश्न** :
विदयार्थीयोंने जो सिखा हैं दनके अपुसार जीनेमें दनकि मदद करणा ।
इन सिध्दांतो में किसे आपके जीवन में जोडने कि जरूरत हैं, और आप क्या कर सकते हैं कि यह आपके जीवन में जुड जाए ?

व्यवहारीक रूप से इसे अपने जीवन में लागू करना : सुसमाचार प्रचार के सभी पवित्र शास्त्रीय सिध्दांतो को अपने जीवन में सक्रिय रूपसे खोजने कि शुरूआत करे ।

# आधारभूत ससमाचार प्रचार और शिष्यत्व
# पाठ ५
# सुसमाचार प्रचार के तरीके और रास्ते

**अगुवा** : विदयार्थी के साथ रूपरेखा देखे । इस बात को निश्चत करें कि वे हर हर विषय को समझे ।

**शिक्षा के विषय** : इस पाठ का उददंश यह हैं कि वचन कि गवाहि देने में उसे मदद मिले, ताकि वे इसका प्रयोग प्रभावशाली रूपसे अलग प्रकार के सुसमाचार में उपयोग कर सके । वे करूणा कि सेवकाई को समझे, ताकि वे जरूरतोंकि सेवकाई के लिए इसका उपयोग करें और सुसमाचार को बाटें ।
कुलुसियों ३:१६ हमें बताती हैं कि में किस तरह परमेश्वर को महिमा देना चाहिऍ यह गवाहि देने के लिए ि कवह कौन हैं वचन और कार्य में । इसे करने के लिए कई तरीके होते हें यह कुछ निर्देशन और सुझाान दिए गए हैं कि किस प्रकार इसे किया जाना चाहिए ।

**क वचन में गवाहि देना**

१ बोले गये वचन को बाटना
- क सार्मथ में
- ख टेलीफोन या व्यक्तीगत रूपसे इसे किया जा सकता है।
- ग हमारे प्रतिदिन के कार्य में हमें जैसा मौका मिलता हैं ।
- घ विषेश रूपसे गवाहि देने के कार्यक्रम जैसे कि योजना के अनुसार लोगो तक पहुॅचना
- ज अलौकिक भेट जब परमेश्वर आपको विषेश व्यक्ती कि और अगुवाई करता हैं

**लिखीत वचन**

क पर्चीदेना । हमेशा पर्चाया लेकर घुमे , सुसमाचार पर्चीया जो विषेश समस्याओं जैसा नशा, हताशपन इत्याइि के साथ व्यवहार करता हें ।

ख पवित्र शास्त्र या नया नियम देना ।
यह कार्य खास आवसनर जैसे जन्मदिन, मसीह के जन्म दिवस, या नये जलोगो के स्वगतपर दिया जा सकता है ।

ग चिठठी भेजना या किसी ऐसे व्यक्ती को पर्ची भेजना जिसके लिए हम प्रार्थना कर रहे हों या आधिकार के स्थान में हो ।

३ टेप्स, ओडीयो तथा विडीयो इसे बाईबन के रूप में तोहफा के समान दिया जा सकता हैं । याद रखे कि परमेंश्वर का वचन एक सामर्थी

शस्त्र हें जो द्रढ गडों को तोड डालता हैं और सच्चई को प्रशिक्षीत करता हें इब्रानी ४:१२ और २ कुरिन्थियों १०:४—५ । यह ऐसा एक बम हें जो परमेश्वर के समय सारणी के अनुसार विरूफोट होगा यशायाह ५५:११

ख कार्य में गवाही देना करूणा सेवकाई ऐसा जीवन शैली जो देने का काम करता हो ।

२ पवित्र आत्मा के सामर्थके व्दारा शारीरीक मानसीक भावुक और आत्मीक जरूरतोंकि सेवकाई करना ताकि हम यीशु मसीहा को आपने इर्द—गीर्द के लोगों तक बाट सके मत्ती १०:७—११, २६—२७, लूका ६:१७—१८, प्रेरितों के काम १४:८—१०.

४ सेवकाई में पहिलौटा स्थान हमेशा विश्वासीयों को देना चाहिए और फिर संसारको यूहन्ना १३:३५, गलतियों ६:१०

५ हमे हमेशा पवित्र आत्मा के निर्देशन को खोजना चाहिए जब दुारोंकि जरूरतोंको सेवकाई करते हैं ।

**ध्यान दे** :

एक जरूरत के विषय में आप कुछ कर सकते हैं यदि कुछ नहि कर सकते तो आप इस व्यक्ती के साथ प्रार्थना कर सकते हैं ।

**आधारभूत प्रश्न** :

विदयार्थीने जो कुछ सीखा हैं दसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में उनकि मदद करना ।

१ इनमें से किस सुसमाचार प्रचार के तरीके को आप अपने जीवन में लागू करेगे । इसे करने के लिए आप क्या करेंगे ।

व्यवहारीक रूप से आपने जीवन मे इसे लागू करना : करूणा सेवकाई सुसमाचार प्रचार करें , किसी ऐसे व्यक्ती को ढूंडे जो जरूरत में हैं उनकि मदद करें, ताकि सुसमाचार को बांटा जा सके । इसके विषय में नीचे एक विस्त्रत गवाही लिखे ।

# आधारभूत सुसमाचार प्रचार और शिष्यत्व
# पाठ ६
# मित्रता का सुसमाचार प्रचार

**अगुवा** : विदयार्थी के साथ रूप रेखा देखे । इस बात को निश्चीत करें कि उन्होंने हर बात को समझा हैं ।

**शिक्षा के विषय** : इस बात का उददेश यह है कि विदयार्थियो को समझाए कि मित्रता का सुसमाचार प्रचार हर मसीहा का जिम्मेदारी हैं, और किस प्रकार प्रतिदिन सक्रीय रूप से हमे इसमें शामिल हो सकते है।

**लक्ष्य** : इस बात का निश्चित करने कि हमस ब को गवाहि देते है जिस प्रकार परमेश्वर हमें अवसर देता है।

**विधी** :

१ पहला या शुरू के संपर्क
२ जारी संपर्क
३ योजना नुसार संपर्क

**कदम** :

१ खोऐ हुए मित्रों कि एक सूची बनाएँ परीवार के सदस्य , पडोसी , सहकर्मी, दास, कलीसीया में भेंट करनेवाले इत्यादी. इसमें प्रतीदिन नये नाम जोडे जैसे आप नये संपर्क स्थापीत करे हैं ।

२ उनके लिए नित्य प्रार्थना करें यदि संभव होतो प्रकतदिन परमेश्वरसे मांगे कि उनके जीवनोंसे शैतानी ताकतो को तोडे , पवित्र आत्मा के व्दारा उन्हें खिचे और पाप के विषय में दोषी ठहराएँ, धार्मीकता और न्याय के बारेमें सीखे ।

३ प्रतिदिन जिन नए लोगो से आप मिलत हैं उनको यीशु मसीहा के विषय में बाटे। हो सकता हें कि शुरूआत का संपर्क हि सीर्फ एक मौका हो जहॉ आप दुारें व्यक्ती से प्रभु के बारे में बाटतें हो ।

४ प्रतिदिन कि गवाहि और खोए हुए लोगो से मिलना समयसारणी के अनुसार होता हैं । ऐसे अवसर के विषय में सोचे जहॉ आप खोए हुए मित्रो से मिल सकते हो यह मानकर कि अलौकिक भेट हैं जहॉ आप उनको यीशु मसीह के विषय में बाटजें और उनकि जरूरतों की सेवकाई करते ।

५ एक व्यक्ती के साथ हर हप्तें संपर्क बनाने की योजना बनाएँ इस उददेश के साथ कि सुसमाचार बॉटा जाएँ । उनसे भेट करें या दनको अपने घर पर बुलाएँ । दुसरे मसीह को अपने साथ रखें ।

६ गवाही देते समय :

क सुसमाचार के विषय में बांटे । या गवाही दे ।
ख पर्ची दें / या पवित्र शास्त्र, या नियम यदि संभव हो ।
ग उनसे पुछे कि दनके पास कोई प्रार्थना नीवेदन हैं या नही और उनके साथ प्रार्थना करें भेट को खत्म करने से पहले ।

७ यदि वह व्यक्ती मसीह को स्वीकार नही करता, तो अपना दरवाजा भविष में भेट के लिए खुला रखे और / या आपको भेट करने के लिए उन्हें निमंत्रन दें ।

**नियम** : पाठ ६ देखे, एक दरवाजे से दुसो दरवाजे तक का सुसमाचार प्रचार

**मित्रता के सुसमाचार प्रचार व्दारा लाभ**

१ यह एक स्वाभावीक बात हैं, जैसे लोगे के साथमसीह को बाटना जो आपके करीब और प्रिय हों।
२ ऐसा करना प्रभावशाली होता हैं — माता—पिता बच्चों के साथ, मित्र—मित्रों के लिए, एक पडोसी दुसरे पडोसी के लिए — इस मरह वचन फैलाता हैं ।
३ ऐसा करने से सहयोग और पोशन मिलता हैं — प्रेम रखनेवाला, ध्यान रखनेवाला संगीत, जो सच्चे शिषत्व के लिए जरूरी हें, जो पहले से असतित्व में हैं।
४ यह आनंद और खुशी कि बात होती है — इससे बढकर व्यक्तीगत इनाम क्या हो सकता है कि कोई मसीह में अपने परिवार का एक भाग, मित्र, पडोसी, और सहकर्मीयोंको अगुवाई देना ।

## मित्रता के सुसमाचार प्रचार का प्रभाव

कलीसीया बढोत्री का निरिक्षण यह प्रकाशीत करता हैं कि ८० से ९० प्रतीशद जो आज के कलीसीया के सदस्य हैं, उनपर उनकेहि मित्र समुह व्दारा प्रभावीत हुए, ८२ प्रतीशद नये धर्म को स्वीकरनेवाले जो बिली ग्रहम के क्रूसेड में आऐ थे उन्होंने किसी कर्लीसीया में भाग लीया जहॉ उनके ''मित्र समूह '' में से एक सदस्य या मित्रता के सुसमाचार प्रचार के कुछ वास्तविकताऍं और परिणाम oikos से लिया गया हैं जो मित्रता सुसमाचार के व्यवहारीक पहुॅच के सिखाता हैं ।

**आधारभूत प्रश्न** :विदयार्थीने जो सिखा हैं असके अनुसार जीवन व्यतीत करने में उनकी मदद करना ।

१ क्या आपने खोए हुए मित्रों कि सूची बनाया हैं ? हॉ — नही — यदी नही तो इसी क्षण ऐसा करें ।

२ क्या आपने खोए हुए मित्रों के लिए प्रतिदिन प्रार्थना करते हें ? हॉ — नही — यदी नही तो इसी क्षण ऐसा करें ।

३ क्या आप कम से कम एक खोऐ हुए मित्र को हर हप्ते यीशु मसीह के विशमें बॉटते हैं ? हॉ — नही — यदी नही तो इसी क्षण ऐसा करें ।

४ क्या आप अवसर मिलनेपर प्रतिदिन यीशु मसीहा के बारेमेंबॉटमे हैं ? हॉ — नही — यदी नही तो इसी क्षण ऐसा करें ।

**व्यवहारीक रूप से लागू करना** :इस हप्ते एक मित्र को गवाहि दे, और विस्तृत रूप से इसके विषय में गवाही दे ।

# आधारभूत सुसमाचार प्रचार और शिष्यत्व
# पाठ ६
# एक व्दार से दुसरे व्दार तक सुसमाचार प्रचार

**अगुवा_** : विदयार्थी के साथ रूपरेखा देखे । इस बात का निश्चय करें ि कवे हर पिषय को समझे ।

**शिक्षा के विषय** :इस पाठ का उददेश यह है कि हम एक व्दार से दुसरे व्दार तक सुसमाचार प्रचार कैसे किया जाता हैं यह विदयार्थी को समझने में मदद करें, ताकि वे ऐसे सेवकाई का एक भाग बन सके ।

**उददेश_** : एक विषेश क्षेत्र के हर घर में सुसमाचार पहुॅचाना ।

**नीचे दिए गए वस्तुओं कि जरूरत हैं** :

१ कागज या नोटबुक ताकि नाम पता तथा दुसरे सुचनात्मक बाते लिखा जा सके जिन घरों में भेट करने जा रहे हो ।

२ कुलीसीया का पुस्तीका जो सुचना देती हैं कलीसीया, उसकि सभाऍं समय, जो सेवकाईयॉ उपलब्ध हें, इत्यादी । एक लिखीत विस्तृत संदेश जो लोगोके जरूरतों प्रति चिंता व्यक्त करती हो भेट के समय, या सहायक होात हैं पुस्तीका में सुसमाचार प्रचार का छोटा प्रस्तुतीकरण ीिना चाहिए ।

३ आधारभूत सुसमाचार पर्चि जो सुसमाचार संदेश का बाटती हो तथा किसप्रकार प्श्चाताप तथा उध्दार प्राप्ती हो ।

४ विशेष जरूरतो के लिए दूसरी पर्चिया जो उन प्रश्नों पर आधारीत हो जैंसेधर्म, नशीले पदार्थ का सेवन या पारीवारीक समस्याएँ ।

५ पवित्र शास्त्र या नया नियम उन घरोंमें देना जहॉ एक भी न हो ।

**लक्ष्य** : हर घर के परीवार के सदस्य मसीहा की और अगुवाई करना ।

**लक्ष्य प्राप्ती के लिए कुछ कदम** :

१ जीस क्षेत्र में आप पहुचना चाहते है उसका नक्शा खरीदे या बनाएँ । जहॉ आप कलीसीया सभा के लिए आप मिलते हैं वहॉ से कार्य करना आक्ष्छा होता हें ।

२ एक विषेश क्षेत्र मे पहुँचने के लिए एक प्रशिक्षीत गुट को कार्य सोपे दो या उससे जादा लोग ।

३ इस गुट को प्रार्थना और उपवास करना चाहिए । उस क्षेत्र के लिए जिनके उपर इन लोगो कार्य सोपा गया हो ताकि वे अपना आधिकार उन आत्मिक ताकतों क उपर रखे जो वहॉ मैजूद हो, और परमेश्वर के अभिषक और बुध्दी के लिए मांगना जैसे वे सुसमाचार प्रचार करते हो । उन्हें यह भी प्रार्थना प्रचार कराना चाहिए कि हर घर सुसमाचार प्रचार के लिए खुले ।

४ एक व्दार से दुसरे व्दार तक भेट करना शूरू करे इस बात का निश्चय करें कि उस क्षेत्र में हर घर में आप का भेट करें । एक ऐसा समय चुने जहॉ लोग घरपर होगे, तथा उस समय भोजन न करते हो । अंधेरा होने के बाद लोगो से मिलना ठिक नही ।

५ एक व्दार से दुसरे व्दार तक जाने का तरीका क. दरवाजे कि घंटी बजाए अगर वहा हो यदी नही, तो दरवाजे में मस्तक दे ताकि सुपाइ्र आए ३० सेकंद या उससे थोडा ज्यादा रूके यदी फिर कोई जवाब ना हो, एक या दो से जादा मस्तक दे । यदी फिर भी कोई जवाब न हो तो वहा का नाम पत्ता दिनांक या दुसरे मदद देनेवाली सुचनाएँ लिखे ।

**ख यदी कोई घरपर हो** :

१ अपना परीचय दे

२ इस वास्तवीकता को बॉटे कि आपका इस क्षेत्र में लोगो से भेट करना वहॉ के जोगो के आत्मीक जरूरतों को पूरा करने के लिए है ।

३ उन्हें बात करने दे । उनसे उनके कार्य, परीवार इत्यादी के प्रश्न पुछे ।

४ उनसे पुछे ।

क इस पडोस मे कितने समय से हैं ?
ख क्या किसी विशेष मर्ध में आपका पालन पोषन हुआ ?
ग क्या आप वर्तमान में किसी विशेष कलीसीया में जाते हैं ।
घ क्या मैं जीवन के समस्याओं के विषय में बॉट सकता हूँ ?
सुसमाचार पर्चीया पाठ २ मे जो रूप रेखा दि गई हें उसका दपयोग करते हुऍ सुसमाचार को प्रस्तुत करें ।

५ परीवार के आत्मीक जरूरतों के विषय में जानने का निश्चय करें । आप घर से निकलने के बाद इसे आपने कागज या नोटबुक में लिखना चाहेंगे ।
६ यदि वे सुसमाचार स्वीकार करतें हैं, तो जो पाठ ९ में अनुवर्ती कार्यक्रम के तरीक को अपनाए ।
७ यदि फिा भी वे सुसमाचार स्वीकार न करते हो । परंतु आपको बाटने कि अनुमती देते हो तो भविष्य में भेंट के लिए दरवाजे को खुला रखे ।
८ हमेशा प्रार्थना के साथ समाप्त करें उनसे पुछे यदि कोई विषेश प्रार्थना निवेदन हैं या नही ।

**एक द्वारसे दुसरे व्दार तक जाने का नियम :**

१ हमेशा मुस्कुराऍ और शिष्ट बने । उनके समय के लिए दन्हें धन्यवाद दे ।
२ जब कहा जाये तो वहॉसे निकल पडे ।
३ अपने नोटबुक में आपके घर से निकलने से पहले, परंतु दुसरों के घर जाने से पहले ।
४ सबसे आच्छा तथा साफ पहनावा पहिने मैला—कुचला दिखानेसे बहतर सजना—सवरना होता हैं ।
५ जौ शादिशूदा जोडी हो वैसे दो—दो करके निकले यदि कोई शादिशुदा जोडी न हो तो एक समूह में तीन सदस्य रखे । जिसमें से एक विपरीत लिंग का होना चाहिऍ ।
६ यदि कोई बच्चा उत्तर देता हो, तो उसे मॉगें की वो आपने माता या पीता से बात करें ।
७ जब दरवाजेपर रूके हो ता उनसे थोडा दूर खडे होकर बात करें और चिंल्लाकर बात न करें । क्यों कि आपको कोई देख रहा होता हैं ।
८ जैसे ही घरसे निकलते हो अपने गुट के लोगोंसे बातचीत नही करना चाहिऍ । तबतक रूके जबतक आप निश्चींत ना हो जाते हो कि लोग आपको सुन न पाऍ ।
९ उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जिनसे आपने भेट किया हैं ।
१० आप आपने भेट के तरीके सुधारनेके लिए एक दुसरे के साथ बाटे जब आप भेट करने के बाद घर आते हो ।

११ यदि आपके भेट के समय वे उपलब्ध नही होते, तो एक ऐसा समय निर्धारीत करें जब आप वापस आकर उनसे भेंट कर सकते हो । अपने नोट बुक में समय लिखे ।

१२ हर घर में सुसमाचार साहित्य का एक टुकडा छोडने कि कोशीश करें ।

१३ निरंतर लोगो से मिलते रहे जैसे वे सुसमाचार को सुनने के लिए खुले हो । मसीह में सर्मपण कर लेने के बाद, अनुवर्ती विधीयोंका उपयोग करें जो पाठ ९ में दिया गया हो ।

लक्ष्य कि रूपरेखा के इन कदमों को याद रखें आपके को कार्य सुधारने निरिक्षण को दे ।

**आधारभूत प्रश्न** विदयार्थी ने जो सीखा हैं । उनके अनुसार जीवन व्यतीत करनें में उनकि मदद करना ।

१ क्या आपने एक दरवाजे से दूसरे दरवाजे तक का सुसमाचार प्रचार किया हैं? हॉ — नहीं — यदि नहीं , तो एक गुट के साथ ऐसा करने कि कोशीश करें कम से कम एक बार यह दंखने के लिए कि आप इसप्रकार के सेवकाई के लिए बुलाएँ गए हो या नहीं ।

२ यदि आप इस सुसमाचार प्रचार के लिए बुलाए गए हो तो क्या आप उसे कर रहें हैं ? हॉ — नही — यहद नही, तो आज से ऐसा करना शरू करें ।

जीवन में व्यवहारीक रूपसे इसे लागू करना ऐसे एक समूह के साथ काम करें जो एक दरवाजेसे दुसरे दरवाजे तक का सुसमाचार प्रचार करता हो, और क्या हुआ इसके विषय में एक विस्तुत्र गवाही लिखे ।

# आधारभूत सुसमाचार प्रचार और शिष्यत्व
# पाठ ८
# सडक सेवकाई

**अगुवा** : विदयार्थी कि सार्थ रूपरूखा देखे । इा बात का निश्चय करें किवे हर विषय को समझ रहे हो ।

**शिक्षा के विषय** : इस पाठ का उददेश यह हैं कि विदयार्थी को सडक सेवकाई के मौलिक यिध्दांतो को समझने में मदद मिले ताकि वे भी सडक सेवकाई समूह का एक भाग बन कसे ।

**उद्देश** : एक विषेश क्षेत्र को या लोगो के समूह को सुसमाचार बाटनस ।
**लक्ष्य** : सच्चई के वातावरण को बनान जहॉ लोग लोग आजाद हो जाए ।

**१ विधिया — बीज बोना**

**क** एक पर एक — यह खोएँ हुओं के साथ रिश्तों का विकास करने के लिए उपयोग किया गया हैं । ताकि उनके हदय मसीह को स्वीकार करने के लिए तैयार हो ।

ख पर्चिया देना
**ग** चिन्ह
**घ** क्रूस
**ड** सडक प्रचार — शुभ संदेश के विषय में घोषणा करना ।
१ विषय — विषय क्या हैं
२ रेंखाकित करना — हमें दिखाएँ कि इसका मतलब क्या होात हैं।
३ लागू करना
४ अपने विषय को जाने ।
५ अपने लोगो को जाने ।
६ अच्छी तरह पेश करें ।

**क** हाव—भाव का उपयोग करे
**ख** मनन का विषय — सोचे जब आप बात कर रहे हो ।
**ग** पुन: निर्षेश — इन बातों को पत्ता करना कि किस प्रकार वे आपको समझ रहे है। ।
**घ** हियाव — बोलचाल कि आजादि में अविचलीत होना ।
**ड** संगीत

**च** नाटक

**छ** चलचित्र

ज चौक, बाते तथा चित्र बनाना ।

**नियम : आपनी आत्मा में तैयार रहे ।**

ख व्यक्तीगत हाजिरी ।

ग एक साथी के साथ जाएँ ।

घ अधिकार आदंर करे जब संभव हो ।

ड वाद–विवाद न करें ऐसे लोंगो को खिला नहीं सकते जिन्हें भूख न हो ।

च भविष्य को विद्रोह से हटाए

छ दूसरों के जरूरतो कि केप्री संवेदनशील रहे ।

ज जब संभव हो तो अनुवर्ती कार्यक्रम करे ।

झ विश्वास योग्य रहे मिश्नरी सालों तक बिना परीवार के गवाही देते हैं ।

परमेश्वर के हाथ में परीणाम रखे ।

३ अनुवर्ती कार्यक्रम के लिए देह को तैयार करें ।

क सदस्यो को श्रध्दालु तथा समर्पित जीवन शैली बीताने कि अगुवाई करना चाहिए ।

ख सेवकाई सुविधाओं को तैयार करें ।

१ कॉफी घर

२ मिशन सेवकाई घर, तथा ऐसे घर जो लोगो को ले और शिष्य बनाएँ ।

३ कपडे और खाना रखने का स्थान

ग अपने बडे भाई और बहिनों के प्रशिक्षण दे जो नये धर्म परीवर्तन को उनके मसीहि चालखलन में स्थापीत होने के लिए मदद करे ।

**आधारभूत प्रश्न** विदयार्थीने जो यिखा हैं उसे जीवन में लागू करने के लिए मदद करना ।

१ दिए गए सडक सेवकाई विधियों में से किसे आप करने कि ईच्छा रखते हैं ।

२ शुभ संदेश को बाटने के लिए आपके पास कौनसे विचार हैं जिनकि सूची बनाई गई न हो ।

३ कैसे और कब आप इन विधीयोंको शूरू कर सकते हैं जो पहले दो प्रश्नों में सूचित हैं ?

४ सडक सेवकाई के कौन से नियम आपको पालन करने में मुशकिल लगता और क्यों ?

५ आपके कलीसीया में किन बातों के विकास कि जरूरत है ताकि नये धर्म परीवर्तन करनेवालोंको मदद मिले ?

६ अनुवर्ती स्त्रोंपर आप किस प्रकार विकास कर सकते हैं जिनकि आपने सूची बनाई हैं ?

**व्यवहारीक रूप से लागू करना** : एक समूह के साथ सडक सेवकाई और जो घाटा उसके विषय में एक विस्तृत गवाही दे ।

# टाधारभूत समाचार प्रचार और शिष्यत्व
# पाठ ९
# अनुवर्ती कार्यक्रम

**अगुवा** : विदयार्थी के साथ रूप रूखा देखे । इस बात को निश्चीत करे किवे हर विषय को समझें ।

**शिक्षा के विषय** : इस पाठ का उद्देश यह हैं कि विदयार्थी को यह समझाने में मदद करें कि नए धर्म कोस्वीकार करने वाले कि किस तरह अनुवर्ती किया जाए, ताकि उसे अनुशासन में लाया जा सके ।

**उद्देश** : नए विश्वासी को उसके मसीही जीवन में स्थापीत करना ताकि वो यीशु मसीहा के लिए जिएँ ।

**लक्ष्य** : नए विश्वासी को इस बात में स्थापीत करें ।

१ प्रतिदिन पवित्र शास्त्र आधयन
२ प्रतिदिन प्रार्थना
३ पानी का बपतिस्मा
४ पवित्र आत्मा से भरा जीवन
५ संगती
६ उनके जीवन में परमेश्वर कि इच्छा को खोजना

**कदम** :

१ शुरूवात में अनुवर्ती के लिए सपंर्क बनाएँ । उन्हें बुलाएँ या भेट करे २४ घंटे के आंदर, यदि संभव हो ।

नमुने के लिएँ बातचीत दूसरोंके लिए जो अनुवर्ती कर रहे हों ।

नमस्ते ! मैं ———————————— कुलीसीया से आपके लिए प्रार्थना किया ताकि यीशु मसीहा को स्वीकार करे ———————————— मैं आपको मसीही जीवन में शुरूवात करने के लिए मदद करना चाहता हूँ । क्या हम ———— समय में मिल सकते हैं ।

२ पवित्र शास्त्र का आध्ययन करना शरू करें । पीली भेट में पाठ १ करें जो '' आधारभूत मसीही जीवन'' पर आधारीत हो ।

३ उन्हें निमंत्रान दे या कलीसीया में लाए ।

४ हप्ते में दोबार दनससे संपर्क रखे जब तक वे पूरे रूप से स्थापीत न हो जाते हैं ।

५ प्रतिदिन के प्रार्थना में उन्हें उत्साहित करे उन्हें पानी का बपतीस्मा पवित्र आत्मा से भरा जीवन और दनके जीवन में परमेश्वर कि इच्छा को खोजना ऐसे विषय में उन्हें उत्साहित करें ।

६ स्वयं को सलाह देने के लिए या विशेष जरूरतों द्वारा मदद क लिए उपलब्ध करें ।

**आधारभूत प्रश्न** विदयार्थीने जो सीखा हैं उनके उसे अपने जीवन में लागू करनेके लिए उनकि मदद करना ।

क्या आप इस पाठ में दिए गए अनुवर्ती निदेंशत्वोंका उपयोग करते हैं ? हॉ — नही — यदी नही तो आजसे एसा करना शूरू करें ।

व्यवहारीक रूपसू इसे जीवन में लागू करना जिन लोगो आप प्रभु में लरते हैं उन्हे शिष्य बनाने कि शुरूवात करना जो निर्देशत्व दिए गए हैं उनका उपयोग करने के द्वारा ।

# आधारभूत सुसमाचार और शिष्यत्व
# पाठ १०.
# स्मरण रखनेवाली कुछ बातें

**अगुवा** : विदयार्थी के साथ रूपरेखा देखे । इस बात का निश्चय करें कि वे हर विषय को समझे ।

**शिक्षा देनेवाले विषय** : इस पाठ का एद्देश यह हैं कि विदयार्थी को यह समझने में मदद करें कि आत्मीक बढोत्री और शिष्य बनाने के मूलभूत सिध्दांत क्या हें, ताकि वे प्रभावशाली रूप से शिष्य बना सके ।

**उद्देश** : मत्ती २८ : १८ — २० हमे बताना हें कि हमें शिष्य बनाना चाहीए जो यीशु मसीहा के प्रतिदिन सपूर्ण हदय में जीते हैं शिष्य बनाने के लिए पहले आप को शिष्य बनना जरूरी हैं । सेवकाई और कलीसीया रोपण में सुसमाचारप्रचार और शिष्यत्व शामिल हैं । इस पाठ आपको दिखाया हैं कि सुसमाचार प्रचार और शिष्यत्व क्या होता हैं, तथा एक नये धर्म परीवर्तक को किा प्रकार शिष्य बनाया जा सके ।
नए धर्म परीवर्त को शिक्षा देना जब नए धर्म परीवर्तक को शिष्य बनाते हैं , तो आपको पॉच मूल्य क्षेत्रोपर ध्यान देना चाहिए जिसपर नये नियाम के लेखकों ने ध्यान दिया ।

क व्यक्तीगत जीवन
ख पारीवारीक जीवन
ग कलीसीयाई जीवन
ध सुसमाचार प्रचार
ड शिष्यत्व

ज्ब एक नए धर्मपरीवर्तक को शिक्षा देते हैं , तो उन्हें आयतो को आध्ययन करने दे और फिर उनसे मूलभूत प्रश्न पूछे । ताकि वे अपने जीवनपर इसे लागू करे ।

**शिष्य** : याद रखे एक शिष्य वह हैं जो प्रतिदिन परमेश्वर के साथ संगती रखता हो ताकि वह यीशु मसीहा के लिए जिऍ ।
प्रतिदिन परमेश्वर के साथ संगती में शामील हैं !
क वचन जीवन कि रोट
१ उसे पढे इफियों ३:४
२ उसका आध्यन करें श्तीमुयीयुस २:१५
३ उसपर मनन करे भजनसंहिंता १
४ इसे स्मरण करे भजनसंहिंता ११९:११

५ इसे लिखें हबक्कूक २:२
६ उसे जीऍ रोमीयो ६:१७—१८
७ उसे बॉटे १ यूहन्ना १:१—३

ख प्रार्थना
१ स्वयं के लिए भक्ती २६:४१
२ दुसरों के लिए १ तीमुथीयुस २:१

यीशु मसीहा के लिए जिनमे शामील हैं ।
क संगती यूहन्ना १३:३५
ख गवाही देना मत्ती ५:१६

यदी हम शिष्य होते हैं तो हम आत्मीक रूप से बढते हैं । आत्मीक बढोत्री के तीन स्थर ऐसे हैं । यूहन्ना २:१२—१४
क बच्चा
ख जवान, बालिक
ग प्रौढ

आत्मीक बढोत्री में ये बातें शामील हैं ।
क दृदगढो को तोडना कमजोरींयोपर जय पाना इफिसीयों ४:१७—५:१६
ख यीशु मसीहा के मन को स्थापीत करना २ पतरस १:५—१०
ग हमारे जीवन में परमेश्वर के उद्देश्यों को ढूँढना और उसे पूरा करना श्यीमुथीयुस १:९ — इफिसीयों ५:१७

शिष्यत्व में व्यक्तीगत कमजोरी और सांस्कृतीक रिवाजो के दृढगढो को तोडनेमें एक व्यक्ती को मदद करना, व्यक्तीगत जीवनद्वारा मूलभूत पवित्र शास्त्र के सिध्दांतो को सिखना, सुसमाचार प्रचार प्रार्थना और वचन के सेवकाई के द्वारा , और एक व्यक्ती को सेवकाई के कार्य के लिए प्रशीक्षण देना ।

संवकाई का कार्य यीशु मसीहा के सेवकाई के प्रती निरंतर लगे रहना होता हैं । इसमें ये बात शामील हैं ।
क प्रार्थना संवकाई
ख वचन कि सेवकाई
ग जरूरतों के प्रती सेवकाई

परमेश्वर आपने लोगो को हर समस्या के उपर विजय देना चाहता है, दन्हें उसकि सभा में उपयोग करना चाहता हैं, और आनंतकाल तक उन्हें आशीष देना चाहता हैं ।

अनुशासक भाई या बहन जो आत्मिक रूप से बढाहो, ऐसा व्यक्ती जो दृढगढो को तोडने और परमेश्वर के वचन और प्रार्थना द्वारा जीवन में विजय पाता हो तथा यीशु मसीहा के लिए संपूर्ण हदय से प्रतीदिन जीता हो ।

अनुशासन देने के व्यवहारीक कदम :

क नए धर्मपरीवर्तक के विषय में सूचना ले नाम पत्ता इत्यादि ।
ख पवित्र शास्त्र या नया नियम दे और उसके उपयोग को समझाए ।
ग फोन द्वारा व्यक्तीगत रूपसे संपर्क करे । जल्दी जल्दी चिठ्ठी भेजे २४ घंटे के अंदर यदि संभव हो ।
घ व्यक्तीगत जीवनपर आधारीत पारीवारीक जीवन, कलीसीया जीवन तथा सुसमाचारप्रचार के आधारभूत आध्ययनको देखे जितना जल्दी हो सके ।

आधारभूत प्रश्न : विदयार्थीने जो सिखा हैं, उसे अपने जीवन में लागू करने के लिए दनकि मदद करना ।

१ क्या आप शिष्य हैं? हॉ — नहि — यदि नहीं, तो आज एक बनने का निर्णय ले ।
२ क्या आपने आध्यन किया या प्रभु में बढेंह ै ताकि दूसरों को शिष्य बनाए? हॉ — — नहि — यदि नहीं, तो आज ऐसा करना शूरू करें ।
३ क्या आप दुारोंको शिष्य बनाने कि खोज करते हैं और उन निर्देशतों का उपयोग करते हैं जो इस पाठ में दिया गया हो? — — नहि — यदि नहीं, तो आज ऐसा करना शूरू करें ।

व्यवहारीक रूपसे जीवन में लागू करना :
जो निदेशतत्व दिए गए हैं अनका उपयोग कर लोगो को शिष्य बनाए जिनको आप प्रभुमें लाते हों । जब आपने शिष्य बनाया तो क्या हुआ इसका विस्तृत गवाहि लिखे ।

## ***परीशिष्य क***

ब्ने रहने के लिए कुछ निर्देशत्व
प्रतिदिन एक प्रार्थना

१ प्रतिदिन मुख्य बातों को देखे जो आपने किया या कोई विषेश बात जो आत्मिक महत्व रखता हो जैसे आवसर मिलते गवाहि देना और प्रार्थना का उत्तर । जीन लोगो से आप मिले हो उनक विषय में विस्तृत जानकारी लिखे, आपने जो निर्णन लिया हैं, विचार सोच अच्छी और बूी

बाते घटी हैं, और आपने जो किया उसका मूल्यांकन करें । आप किस प्रकार सुधर सकते हो, तथा गलती करनेसे दूर रहें ।

उदाहरण : जनवरी ३, १९९२
मैं कार्य के लिए निकला । यीशु मसीह के बारेमें जान से बॉटा जिसके लिए मैं प्रार्थना करता था । मेरे प्रार्थना सूची के अनुसार मैंने प्रार्थना किया तथा अंतीम समय के विषय में समझ को स्वीकार किया — मती २४ को पढने के द्वारा आध्ययन को देखे विषेश आर्थिक जरूरतों के लिए प्रार्थना किया । प्रार्थना दैनिक को देखे ।

२ प्रार्थना सूची बनाएँ जिसमे खोऐ हुए लोग कलीसीया के सदस्य, राजनितीक तथा आत्मिक आगुजे, मिशनरी और विषेश जरूरतों के अलग — अलग वर्ग हो ।

उदाहरण : खोऐ हुए कलिसीया के सदस्य अगुवे मिश्नरी विषेश जरूरतें
डो शरली प्रस्ताव नाम मिश्नरी राष्ट्रपिता बुश यात्रा

३ एक प्रार्थना दैनिक बनाएँ जिसमें ऐसे विषेश जरूरतें जो परमेश्वर प्रतीदिन आपको दिखाता हैं जैसे आप उनके चवन का आध्ययन करते हैं ।

उदाहरण :
मत्ती २४, जनवरी ३,९२.
आयत १४ मुझे दिखाता हैं कि यीशु मसीहा को बाटना कितना महत्वपूर्ण हैं ।
आयत २० तथा २१ मुझे दिखाता हैं कि प्रार्थना करना कितना महत्वपूर्ण हैं ।
आयत ४४ से लेकर ५१ मुझे दिखाता हैं कि मरे लिए वह करना कितना महत्वपूर्ण हैं जो परमेश्वरने मुझे बताया हैं ।

परीशिष्य ख
व्यक्तीगत प्रार्थना सूची
१ खोया हुआ परीवार

पडोसी

सहकर्मी / सहपाठी

दुसरे

२ कलीसीया के सदस्य

३ अगुवें

४ मिश्नरी

५ विशेष जरूरते

६ दुसरे प्रार्थना निवेदन

## परीशिष्य ग
## ऐसा हदय जो प्रार्थना कि तैयारी को खोजता हो
## तथा व्यक्तीगत बेदारी

संहित १३९:२३—२४ : ''हे परमेश्वर, मुझ जॉच कर जान ले ! मुझे परखकर मेरी चिंताओको जान ले ! और देख कि मुझ में काई बुरी चाल हैं कि नही, और आनंन्त के मार्ग मे मेरी अगुवाई कर !''

परमेश्वर के साथ संगती के लिए परमेश्वर के लोगे के बीच बेदारी के लिए पाप का अंगीकार करना जरूरी हैं । प्रार्थनापूर्वक नीचे दिए गए प्रश्नोंको देखे । एक एक करके हर प्रश्न को देखे । हर प्रश्न का उत्तर सचाई से दे । हर ''हा'' में उत्तर का मतलब होता हें कि आपके जीवन में पाप हैं ।

जैसे आप इन प्रश्नोको पढते हैं, जैसे आपको दोष भावना होता हैं, तो उस समय परमेश्वर से अंगीकार करें, उसे परमेश्वर के साथ सहि करने कि इच्छा रखें_ तब आप जीवन में पाप से शुध्द और क्षमा को प्राप्त कर सकते हैं ।

आप इस बात पर ध्यान दे की आप अपने पापो का अंगीकार परमेंश्वर के सामने करे, जैसे की ''हे प्रभु मैने तुझे अपनी योजना ओ मे पेहला स्थान नही दिया,'' या फिर मैने तेरे कार्य और प्रार्थना करने पर ध्यान नही दिया '' क्योई भी छोटे से

छोटा बहाना न करे, किसी भी पाप के विषय मे जो आपके जीवन मे पाया जाता हो, नितीवचन २८:१३ '' जो अपने अपराध छिपा रखता हैं, उसका कार्य सुफल नही होता, परंतु जो उनको मान लेता और छोड भी देता हैंश उस पर दया की जायेगी।''

ये बात मायना नही रखती की दुसरे लोग क्या करते है या नही करते है , मसीही, कुछ भी बातो को अधुरा न छोडे अपनी और से । परमेश्वर चाहता है की वह अपने कार्य को आपके द्वारा करे जिससे एक महान आत्मीक जागृती उत्पन्न हो। वो इसी बात की सुरूवात आपके द्वारा कर सकता हर उस बात को पुरा करते हुए जो परमेश्वर ने अपनी पवित्र आत्मा और उसके वचन के अनुसार दिखाई है। परमेश्वर की उपस्थिती से आनेवाले बेदारी आजसे ही शुरू हो सकती हो अगर आप इसकी इच्छा करे तो पहले वचन को पढे, प्रश्न पुछे और फीर एक सच्चा उत्तर दे, ''हा''या''ना''।

१. **मत्ती ६:१२—१५:** क्या ऐसा कोई व्यक्ती है जीसके विरूद्ध आप कटुता रखते है? ऐसा कोई व्यक्ती है जीसको आपने माफ नही किया? ऐसा कोई व्यक्ती है जीससे आप नफरत करते है? क्या ऐसी कोई गलत फैमी है जो आप भुलना नही चाहते? क्या ऐसा कोई व्यक्ती है जीसके विरूद्ध मे आप कटुता, क्रोध , या जलन को अपने दील मे पनपने दे रहे है? ऐसा कोई व्यक्ती जीसके विषय मे आप अच्छी बाते नही सून सकते? क्या आप ऐसी कोई बात का सहारा लेकर ऐसा सोचते है की आप के गलत सोचने का तरीका या गलत बर्ताव जायज है?

२. **मत्ती रचित सुसमाचार ६:३३:** ऐसी कोई बात है जिसमें आपने परमेश्वर को पहिला स्थान नही दिया है? क्या आपने ऐसे निर्णय लिए है जो आपके बुद्धीमत्ता और ईच्छाओ के अनुसार है बजाए इसके की परमेश्वर की ईच्छा की खोज किए बिना लिए गए है? क्या ऐंसी कोई बाते है जो आपको परमेश्वर के प्रति संपूर्ण रिती से उसकी सेवाकाए मे समरपीत होने में बाधाए डाल रही है, जैसे की; उच्चाकांक्षाये, मन को लुभाने प्रसन्न करने वाली ईच्छाए, आपके प्रीयजन, दोस्ती, मान्यता स्वीकारने की ईच्छा रखना; पैस, आपकी खुदकी स्वयम की योजनाए?

३. **मरकुस रचित सुसमाचार १:१७:** मसिही के लिए खोज लोको को खोजने में क्या आप नाकामयाब हो गए है? क्या आप प्रभु येशु मसीही के विषय मे गवाही देन मे नाकामयाब हो गए है? क्या आपके जीवन के द्वारा प्रभु येशु मसीह नही दिखाई देते है?

४. **यहून्ना रचित सुसमाचार १३:३५:** क्या आप किसी की विपत्तीयो को देखकर मन ही मन खुश होते है? क्या आप किसी की सफलता या

निपुणता पर म नही मन जलते है? क्या आप किसी संघर्ष या अन—बन को लेकर दोषी है? क्या आप किसी वादविवाद को लेकर झगडा करना या विवाद करना शुरू कर देते है? क्या आप किसी विभाजन के या गलत मौज मस्ती वाली आत्मा के भागीदारी है? क्या आपके जीवन में कोई ऐसे लोग है जिनकी आप जान बुझकर उपेक्षा या तिरस्कार करते है?

५. **मलाकी ३:१०:** क्या आपने परमेश्वर के साथ उसके दीए हुए समय,वरदान और पैसो की चोरी की है जो उसके लिए था? क्या आपने अपनी आमदनी के दशवांश में से परमेश्वर के कार्यो के लिए कम दिया है? क्या आप मिशन के विशेष कार्य करने के लिए प्रार्थना करने में या भेट देने में असफल रहे है।

६. **१कुरिन्थियों ४:२:** क्या आप आजाद व्यक्ती है ताकि परमेंश्वर के कार्य में जिम्मेंदारियों को करने में आप पर भरोंसा किया जाऍ? आप अपनी भावनाओं को दिखाने की अनुमती देते है परमेश्वर के कार्यो के लिए तथा उसके लिए कुछ भी नही करते।

७ **१ कुरिन्थियों ६:१२—२०:** क्या आप अपने शरीर के प्रति ध्यान नही रखते? क्या आप इसे पवित्र आत्मा का मंदीर समझ कर इसका ध्यान रखने में विफल होते है हान वान में असंयम की वजह से आप दोषी ठहरते है? क्या आपका कोई ऐसा स्वभाव है जो शरीर को दूषीत करतां है?

८ **१ कुरिन्थियों १०:३१:** क्या आप छोटा लाभ भी अपने उपर ले लेते है न कि सारी महिमा परमेश्वर को देते है? क्या आप उस विषय में कहते है जो आपने किया है जो न कि वह जो मसीह ने किया है; क्या आपके ज्यादा तर कथन ''मै'' के विषय में है? क्या आप बहुत आसानीसे चोट खाते है? क्या आप ऐसा बनने की कोशिश करते जो आप नही है?

९ **इफिसियों ३:२०:** क्या आप स्वयं के प्रति जागरूक है? न की मसीह के प्रति? क्या आप निचले भावनाओं के द्वारा प्रभु की सेवा में कार्य करने की कोशिश से अपने आपको दूर रखते है।

१० **इफिसियों ४:२८:** क्या आप घूस देते है? क्या आप अपने कार्य को बहुत कम रीति से करते है? क्या आपने कर्ज को चुकाने में ध्यान

नही दिया है? क्या आप कोई ऐसा रास्ता निकलते है? ताकि कर्ज देना बच जाए? क्या आप दूसरों का समय बरबाद करते है?

११ **इफिसियों ३:२०:** क्या आप दोष देते है? क्या आप दूसरों के गलतियों को निकालते है? क्या आप किसी व्यक्ती या चिज के प्रति आलोचनात्मा मनोवृत्ती है? क्या आप चिढचिढे है? क्या आप छुपे हुए क्रोध को लेकर चलते है? क्या आपको क्रोध आता है? क्या आप दुसरों के प्रति असंयम होते है? क्या आप क्रुर या निर्दयी है?

१२ **इफिसियों ५:२०:** क्या आपने परमेश्वर को हर बात का धन्यवाद देने से इनकार किया है, चाहे वह अच्छा हो या बुरा हो? क्या आपने वास्तविक रूप से परमेश्वर के वचन पर भरोसा न करके उसे झुठा कहा है? क्या आप चिंता करते है? क्या आपका आत्मिक तापमान आपकी भावनाओं पर आधारित है। या परमेश्वर के वचन की वास्तविकता पर?

१३ **इफिसियों ५:१६:** क्या आप उन्नति नही देने वाले टि.वी या रेडिओ के कार्यक्रम को सुनते है? क्या आप ऐसे पत्रिकाएँ पढ़ते है जो योग्य नही? क्या आप सांसारिक मनोरंजन में भाग लेते है? क्या आप ऐसे स्तोत्र जो संतुष्ट पाने की खोजते है, उससे जरूरी समझते है? क्या आप , ऐसे कुछ कार्य करते है जो यह दिखाता हो कि आप प्रभु यीशु मसीह में संतुष्ट नही है?

१४ **फिलिप्पियों १:२१ :** क्या आप इस जीवन के बोज से दब गये है क्या आपके हदय की बातचीत ''चीजो'' के उपर आनंद होता है न कि प्रभु और उसका वचन क्या आपके जीवन में कोई बात इससे जादा मायने रखती है कि मसीह के लिए जिना और उसे प्रसन्न करना?

१५ **फिलिप्पियों २:१४:** क्या आपने कभी वचन या कार्य से किसी को चोट पहुँचाई है? क्या आप गपशप करते है? क्या लोग उपस्थित नही रहते तो उनके विषय मे गलत कहते है?क्या आप सच्चे के विरूद्ध घमंड करते है? क्योंकी ओं दूसरे समुह के है? या इसलिए कि वे उन बातों को जैसा आप देखते वैसा नही देखते?

१६ **फिलिप्पियों ४:४:** क्या आपने किसी तरह से उसे अपमानित किया है? क्या आप उसके प्रयोजन से संतुष्ट रहे है? क्या आपके हदय में कुछ बात है जो परमेश्वर को पुरे रिती से आज्ञा करने में इच्छा नही रखता? क्या आपके अंदर कोई आरक्षण है? कुछ करने या नही करने

में जो शायद परमेश्वर की इच्छा है? क्या आपने परमेश्वर के सीधे अगुवाई का निरादर किया है?

१७फिलिप्पियों ४:४: क्या आप ऐसे बातचित में लग जाते है जो खाली और लाभ प्रत नही होती क्या आप कभी झुठ बोलते है?क्या आप बढ़ाचढ़ाकर बात करते है? धोका देते है? चोरी करते है? ध्यान पुर्वक देखे .... क्या आप अधिक दाम वसुल करते है?

१८**श्तीमुथीयुस २:२२:** क्या आपने कोई व्यक्तीगत आदते है जो शुद्ध नही क्या विपरीत लिंग के प्रति अशुद्ध सोच को अपने दिमाख में वास करने की अनुमती देते है? क्या आप ऐसा कुछ पढ़ते है जो अशुद्ध है या अपवित्र बात का सुझाव देते है? क्या आप किसी अशुद्ध मनोरंजन में शामिल होते है? क्या लालस भरी निगाहों से दोषी ठहराएँ गऐ है?

१९**इब्रानियों १०:२५**: क्या आप सुसमाचार प्रचार की सभाओं से दुर रहते है? क्या आप फुसफुसाते है, या दुसरे बातों के विषय में सोचते है? जब परमेश्वर का वचन पढ़ाया या प्रचार किया जाता है? क्या आप सभाओं में नियमित रूप से हाजरी देते है? क्या आप प्रार्थना सभा में भाग लेने से इन्कार करते है? क्या आप आपने निजी प्रार्थना को थोडे भी रूप से इन्कार किया है? क्या आपने परमेश्वर के वचन का तिरस्कार किया है? क्या आप पवित्र शास्त्र और प्रार्थना को दिलचस्प नही पाते? क्या आपने भोजन के लिए धन्यवाद देना इन्कार किया है? क्या आपने प्रतिदिन परिवारिक प्रार्थना का इन्कार किया है?

२०**इब्रानियों १०:२५** : क्या आप कलीसिया के कही और अगुवों के प्रति समर्पित होने को नाकारते है? क्या आप सुस्त व्यक्ती है? क्या आप सुसमाचार कार्य के मद्द के लिए जो निवेदन दिया जाता है उसका विद्रोह करते है? क्या आप जिद्दी या ऐसी आत्मा है जो शिक्षा प्राप्त नही करना चाहते?

२१**याकुब १:२७** : क्या आपने स्वंये को ''चिन्हित'' करने की अनुमति दी है? क्या आपका पहनावा परमेश्वर को भाता है? क्या उन बातो पर पैसा खर्च करते है जो परमेश्वर को भाने से परे हो क्या आप उन चिजों के लिए प्रार्थना करने के लिए इन्कार करते है जो आप खरीदते हो?

२२**याकुब ४:६** : क्या आप ऐसा महसुस करते है कि मसीह होने के नाते आपका निर्वाह अच्छे रूप से होता है? कि आप इतने बुरे नही है? कि आप काफी अच्छे है? क्या आप जिद्दी है? क्या आप इस बात पर अड़ जाते है कि स्वंय का तरीका होना चाहिऐ? क्या आप अपने ''अधिकार'' पर जोर देते है?

२३ **याकुब ४:११** : क्या आपने परमेश्वर का निरादार किया है या उसके कार्य में रोक—टोक लगाई है या उसके दासो पर आलोचना करने के द्वारा? क्या उनके पास्वान या दुसरे आत्मीक अगुवा के लिए नियमित रूप से प्रार्थना करने में विफल रहें है क्या आप खुद के सुधार को स्वीकार करने में कठिनाई पाते है? जो आपका पुन:स्थापन करना चाहता हो? क्या आप इस बात से चिंतीत है कि लोग क्या सोचते न की परमेंश्वर को क्या भाता है?

यदि आप ईमानदार और सच्चे रहे हो अपने पाप को मानने ने, तब आप परमेंश्वर की ओर से शुद्धि के लिए तैयार है। जिन पापो को मान लिया जाता है उसी का अंगीकार होता है। इन तीन बातो को याद रखे :

१ यदी आप परमेंश्वर के विरूद्ध हो तो तो इसे परमेंश्वर से अंगीकार करे और उसके साथ कार्या को सही करे।

२ सदि पाप किसी व्यक्ती के विरूद्ध हो, तो यह परमेंश्वर को अंगीकार करे फिर उस व्यक्ती के साथ स्वंय को सही बनाएँ।

३ यदि पाप किसी समुह के विरूद्ध में हो, तो परमेंश्वर के साथ दसे अंगीकार करे फिर उस समूह के साथ उन बातों को सही करे।

यदि पुर्णरूप से अंगीकार हो, तो पूर्ण रूप से शुद्धी भी होगी: प्रभु का आनंद जरूर आएगा, फिर पवित्र आत्मा के सामर्थ में गवाही और प्रार्थना होगी, फिर बेदारी आएगी।

भजन संहीता १९:१२:''अपनी भुलचुक को कौन समझ सकता है? मेरे गुप्त पापों से तू मुझे पवित्र कर।''

यह प्रार्थना सुची प्रभु यीशु मीह के द्वारा दिया गया था जब उसने चीन में शान —तंत्र के सन्तों से बातचीत किया, सन १९३० में। जो परमेश्वर ने दिया,उसकी आज्ञा के बाद बैदारी आई; जैसे लोगों ने उद्धार प्राप्त किया, और मरे हुओं में से जी उठे।

# BASIC INSTITUTE REQUEST FORM

यदि आप आगे का प्रशिक्षण अंग्रेजी में चाहते हैं, तो कृपया हमसे संपर्क करे।

NAME _____

ADDRESS _____

CITY_____ STATE_____ ZIP_____

COUNTRY_____

HOME PHONE _____

WORK PHONE _____

CELL PHONE _____

BEEPER _____

FAX _____

EMAIL _____

I would like to train in English.

Please send me the BASIC Institute Catalog.

I have a prayer request. (Please put on back)

## Mail To:

BASIC Institute
P.O. Box 431
Kiln, MS 39556 U.S.A.
Or
Phone (228) 255-9251 / Fax (228) 255-8927
Email basic@basicministries.com
Web page www.basicministries.com

यदि आप इस अध्ययन से (आशिषित) हुए हैं तो किसी के साथ इसकी प्रतिलिपि को बाँटे।

प्रकाशक से सीधा प्राप्त । अंग्रेजी में लिखकर हमें अवश्य बतायें आप किस भाषा में चाहते हैं।


WRITE TO:

BROTHERS & SISTERS IN CHRIST
P.O. BOX 431
KILN, MS 39556
U.S.A.

Phone (228) 255-9251

Fax (228) 255-8927

Copies are available by Email
Send your request to basic@basicministries.com
Or
Visit our web site
www.basicministries.com


COPIES ARE AVAILABLE IN OTHER LANGUAGES.
CONTACT US FOR MORE INFORMATION.

क्या आप ऐसा विजयी जीवन जीना चाहते हैं, जिससे आप अन्य लोगों के साथ यीशु को प्रभावी रीती से बाँट सकें ?

क्या आप सामध्यं के गवाह बनना चाहते है ?

क्या आप जिंदगियों को सच में बदलते देखना चाहते हैं जब आप सुसमाचार को बाँटें ?

क्या आप परमेश्वर के प्रचार के सिध्दांतो को जानना चाहते हैं ?

क्या आप पाँच प्रकार के प्रचार और उनके उद्देश्यों को जानना चाहते हैं ?

।। तब यह पुस्तक आप ही के लिये है ।।

भाई हेनरी पल्सीफर द्वारा संकलित

और

पॉला मिंगुची द्वारा चित्रित

आपको सफल और विजयी जीवन जीने में सहायता करने हेतू अध्ययन की श्रृंखला की यह प्रथम रचना है। भाई हेनरी ने ५० से अधिक वर्षो तक यीशु के लिये जीने से विजय का अनुभव किया है। साथ ही क्रूस के साथ चलने से उन्हे केंसर से भी चंगाई मिली है। चँगाई मिलने के बाद उन्हों ने संसार की यात्रा की, जिस में उन्होंने यीशु को बाँटा और औरों को सिखाया कि यीशु के लिये जीने से विजय और सफलता कैसे प्राप्त की जाती है , जिससे परमेश्वर का उद्देश्य उनके जीवन में कैसे पूरा होता है।

अपने इन अनुभवों पर आधारित लेखों का संकलन उन्होंने किया है, जिससे पवित्र शास्त्र के मूल सिध्दांतो को लोगों को समझने में और उनके मुताबिक जीवन जीने में सहायता हो, जिससे (लोगोंको) उन्हे एक सफलतापूर्ण, विजयी जीवन प्राप्त हो। इस विशेष अध्ययन की रचना , पारिवारिक जीवन के लिये, परमेश्वर के सिध्दांतो को समझने में सहायता करने के लिये की गयी है। इस से आपके निजी जीवन में भी , (परमेश्वर का ) (धार्मिक ) व्यक्ति बनने में और प्रत्येक दिन यीशु के लिये जीने से आप को सफलता और विजय की प्राप्ति होगी। इस के उपयोग से आप औरों को पारिवारिक जीवन के बारे में सीखा सकेंगे और, व्यक्तिगत और सामुदायिक अध्ययन के लिये भी कर पायेंगे।

प्रतिलिप्यधिकार १९९० सर्व हक सुरक्षित

इस अध्ययन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक की अनुमति के बिना छापना नहीं है।
अतिरिक्त , कुछ हिस्से छापने के बाद मुफ्त में बाँटे जाए।
मूल स्त्रोत को उचित प्रमाण देना आवश्यक है।

PUBLISHED BY:

BROTHERS & SISTERS IN CHRIST
P.O. Box 431
Kiln, MS 39556
USA

Phone (228) 255-9251
Fax (228) 255-8927
Email basic@basicministries.com
On the web at www.basicministries.com